'सत्तपुरूष निवास' (मंदिर)

जगत में मुख और मन से मन रूपी देवी देवताओं की पूजा भक्तियां और अराधनाऐं की जाती हैं, इसलिये जगत में पूजा स्थलों को मन–प्रतीक मंदिर कहा जाता है। सहज सत्त भक्ति मार्ग में मन रूपी ईष्ट व मन से परे का भक्ति मार्ग है। इस मार्ग में जीवात्मां शुद्ध होकर हंसा रूप धार कर अपने मूल परमपिता परमात्मां ''साहिब सत्तपुरूष जी'' में जा समाता है अर्थात मोक्ष को पा जाता है।

'वे नाम सुरति धारा'

वर्तमान युग में साहिब सतपुरूष भक्ति धारा को संत शिरोमणि 'वे नाम' परमहंस जी निरंतर अपनी अमृतमयी वाणी प्रवचनों से प्रज्जवलित किये हुए हैं। उन्हीं के अमृतमयी प्रवचन श्रृंख़्ला को **'वे नाम' सुरति धारा** से जाना जाता है।

साहिबन कुट्टिया एवं साहिबन हाल

सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की वाणी अनुसार 'वे नाम' परमहंस जी की तपोस्थली रिहाड़ी आश्रम को आज से **साहिबन कुट्टिया** नाम से प्रसिद्धी पायेगा। साहिबन कुट्टिया रिहाड़ी में साहिब सतगुरू जी ने दोनों ''सार नाम व सुरत सब्द'' साहिबन सत्तपुरूष जी से सुरति सूं ग्रहण किया तथा इसी साहिबन कुट्टिया में साहिब जी ने निजधाम के संतों के दर्शन पाये।

इसी प्रकार से तालाब तिल्लो सत्संग आश्रम को 'साहिबन हाल' के नाम से जाना जायेगा। इन दोनों आश्रम में ''साहिब सत्तपुरूष'' जी का सदा वास रहेगा। साहिब सतगुरू जी की वाणी अनुसार 'साहिबन कुट्टिया और साहिबन हाल' अपने नाम से जगत में प्रसिद्धी पायेंगे। इन दोनों आश्रमों को **निजधाम के मंदिरों** के नाम से भी युगों–युगों तक जाना जायेगा।

———

’वे नाम सुरति धारा’

1 सहज सहज सब कहत हैं, सहज ना जाने कोए।
सहज से आत्म आई है, सहज कहावे सोए।
सहज सतगुरू जिन सहज से, सहज बीज पाया होए।
मूल सब्द से सहज बनो, सहज से मिलना होए।
सहज स्वांस है, सहज में बहता सोए।
सहज को पकड़ो, सहज बन जाओ।
सहज में सहज कहावे, साहिबन सोए।।

2 सगुण में अटके ज्ञानी, निर्गुण में भटके ध्यानी।
मध्य में सुन ली अनहद वाणी।
यह सब सतगुरू देत हैं, अमृत सब्द सुरति वाणी।।

3 सहज का बीज साहिब कबीर महान, स्वांसा सुरति ’वे नाम’।
दोनों मिल महां बीज हैं, साहिबन नाम मूल नाम।।

4 सतगुरू मिला तो सब मिला, खुल गया कुल्फ़ कवाड़ा।
पूर्ण सतगुरू कृपा सूं, पायो साहिबन प्यारा।।

5 जात धर्म से उपर है, सर्वोपरि सतगुरू नाम।
साहिबन का कैसा नाम, वे नाम ही साहिबन जान।।

6 सतगुरू बड़े साहिब से, प्यारे और ना कोई ठौर।
साहिब सिमरे सो वार है, सतगुरू सिमरे सो पार।।

———————